Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

एक परिपक्व सामाजिक संवेदना – 'कसक' (गीतांजलि श्री)

डॉ. मनीषा सिंह मरकाम*

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत

शोध सरांश– इतना हक सिर्फ एक दोस्त का ही दोस्त के प्रति हो सकता है दोस्ती की चेतना के तल पर कौन से बीज बोए गए हैं यह एक दोस्त का स्पर्श ही उसे महसूस कर सकता है उनकी भावनाओं की गहराई ही उनकी मित्रता की सुंदरता और मिठास है वहीं उनकी सार्थकता भी है। दोनों अपने–अपने जीवन के मकसद को जताने में लगी थी। ऐसा प्रतीत होता है कि दोनों की मित्रता कभी–कभी दार्शनिक मोड़ ले लेती है। दूसरों के मन की बात जान लेने की उत्सुकता में व्यक्ति अपने आप को आईने में देखना पसंद नहीं करता। प्रसिद्ध दार्शनिक लाओत्से ने लिखा है– 'यदि आप दूसरों को समझते हैं तो आप होशियार हैं। यदि आप खुद को समझते हैं तो आप प्रबुद्ध हैं।' ऐसा ही कुछ लेखिका ने कसक कहानी में महसूस किया है– 'बचपन में मैं कहानी करती थी कि मैं दूसरों के मन के अंदर का खूब भाँप लेती हूँ, कब कोई डींग हाक रहा है कब कोई खास मतलब से बात बना रहा है, कौन निर्दोष है कौन कपटी, सब मुझसे पूछ लो।

शब्द कुन्जी– नजरअंदाज, घमंक, खासियत, परिपक, झांपना।

प्रस्तावना – गीतांजलि श्री के प्रत्येक कहानी लेखन की अपनी तमाम खूबियाँ है। उनके लेखन के पीछे छिपे भावों में अद्भुत कलात्मकता हैं जो सहज ही अभिव्यक्त नहीं हो पाती। ध्यानमग्न होकर उनके लेखन को अनुभव करना पड़ता है तब कहीं जाकर कहानी के तार पकड़ में आते हैं। यह कहानी 'कसक' दो मित्रों के बीच हुए वार्तालाप और उनकी अपनी–आपनी तमीज एवम् जिन्दगी जीने के सलीके को दर्शाती है अलग–अलग स्वभाव होते हुए भी दोनों की मित्रता में ठहराव की अच्छी तैयारी को गीतांजलि श्री ने प्रस्तुत किया है। इस कहानी की खासियत यह है कि दोनों के मिजाज अलग होते हैं हुए भी दोस्ती को ग्रहण करने की क्षमता सबसे अच्छी दर्शाई गई है। दोनों की अपनी जिज्ञासा, कड़ी मेहनत और ज्ञान की भूख है। दोनों के अपने जाने– अनजाने जीवन के सबक हैं, दोनों ही अपने–अपने क्षेत्र में संलग्न होकर अपनी पूरी दक्षता के साथ काम करना चाहते हैं दोनों की उम्र ऐसी है कि सीखने की गति तेज और व्यापक हैं– 'वह दोस्त जो मेरी बचपन की सहेली है। उस बचपन की जिसने मेरी घुन्नेपन और उसकी चपलता बहिरंगता को लेकर हमें किसी किस्म की असंगति के एहसास में पीड़ित नहीं होने दिया कितने अच्छे मित्र बन गए हम –वह खिलाडू, मैं पढ़ाकू, वह बिगाढू, मैं संभालू!' दोनों मित्रों की अपनी सफलता और विफलता थी। उनके भीतर मौजूद संभावनाएं ही उन्हें आगे ले जाने में मदद करती थी विभिन्न विषयों पर लड़–झगड़कर विचार –विमर्श भी करती थी। दोनों का अपना–अलग ही रेशमी अहसास था विभिन्न प्रकार की अटखेलियाँ थी। दोनों में समय–समय पर टकराव की स्थिति बनती रहती थी परन्तु लेखिका ने यहाँ यह दर्शाने का प्रयास किया है कि गैरजरूरी टकराव को हमेशा नजरअंदाज करना चाहिए क्योंकि इससे किसी का भला नहीं हुआ है। कहानी में दोनों के किशोरावस्था की हंसी मजाक को भी बताया गया है उसे विनोद प्रियता में जो अपनी जिद को पूरी करने की ताकत को इस कहानी में बताई गई है वह भी प्रशंसनीय है। कहानी में सदाचार और नैतिकता का ध्यान रखा गया है जिससे इस कहानी की व्यवहार की ताकत का पता चलता रहता है– 'किसी छोटी सी बात पर हँसते चले गए थे, एक दिन। हाँ याद आ रहा है, एक कॉलोनी में फँस गए थे। सड़क गोलाकार थी। एक जगह पर दायाँ मोड था जिस पर आकर गोल सड़क से हट सकते थे, किंतु उसी मोड़ पर ढलान था बाई ओर यानि वापस गोल सड़क पर। अब दोस्त है कि जिद्दिया गई की साइकिल से बिना उतरे एक जोरदार मोड़ दूँगी और हम दाई तरफ निकल जाएंगे।'

'कसक' कहानी की खासियत यह है कि दोनों मित्र विचारधारा से अलग हैं पर संवाद के स्तर जुड़ाव की कमी कहीं भी महसूस नहीं की गई। दोस्ती हर स्तर पर सुदृढ़ है। इसे अलग–अलग रंगों में लेखिका द्वारा पिरोने का प्रयास किया गया है। खुशी के सूत्र पीडादायक पलों में महसूस होते रहे है उन्ही पलों को दोनों मित्रों ने अपने–अपने जीवन की प्रक्रिया को समझने में लगा दिया। खुशियों के साथ एक अजीव सा अल्हड़पन था। यही अल्हड़पन दोनों को बरसों दूर रहने के बाद भी बांधे रखता था, एक अजीब सी मस्ती भरा शोर था उनकी खुशियों के आसपास जो बतलाता था कि हम कभी जुदा नही हो सकते। खुशी में दोनें अपने गंतव्य की ओर चल दी फिर से मिलने के लिए। दोनों अपनें जीवन को सुंदर बनाना चाहती थी। अपने गुणों और अवगुणों के साथ बार–बार झगड़ना पर मित्र बने रहना मित्रता में कोई अहम भाव नही स्पष्ट रूप से सब कह देना इतने पर भी मित्रता बनी रहना यह बड़ी बात है। इस कहानी की, मित्रों की स्पष्टवादिता की चेतना के धरातल पर आधारित है, यह कहानी इंतजार न होते हुए भी अतिशय मित्र के इंतजार से सिंचित है इस कहानी के शब्द–दर–शब्द 'अगर ..... यह ख्त ..... जो उसके पति ने लिखा ..... न आया होता.....।

कहना चाहती हूँ वह अचानक धमक पडेगी। पर कहीं इस निहायत घिसे पिटे खयाल का कौंधना मन को बेतरक सालने लगता है। पर ऐसे ही तो

धमक पड़ती थी। अचानक। बिन बताए। या ऐसे बताकर कि न बताती तो ही खैर थी!

एक बार तार मिला था–'रीचिंग सिक्सटींथ रिसीव स्टेशन।' मैं इस शहर में आई ही थी। पर तार भी तो ऐसा था कि उसका नाम न होता तो भी मैं समझ लेती कि यह काबिलियत किसमें है। लेकिन दोस्ती का अपना तकाजा है, क्या–क्या नहीं माफ उसमें।

इतना हक सिर्फ एक दोस्त का ही दोस्त के प्रति हो सकता है दोस्ती की चेतना के तल पर कौन से बीज बोए गए हैं यह एक दोस्त का स्पर्श ही उसे महसूस कर सकता है उनकी भावनाओं की गहराई ही उनकी मित्रता की सुंदरता और मिठास है वहीं उनकी सार्थकता भी है। दोनों अपने–अपने जीवन के मकसद को जताने में लगी थी। ऐसा प्रतीत होता है कि दोनों की मित्रता कभी–कभी दार्शनिक मोड़ ले लेती है। दूसरों के मन की बात जान लेने की उत्सुकता में व्यक्ति अपने आप को आईने में देखना पसंद नहीं करता। प्रसिद्ध दार्शनिक लाओत्से ने लिखा है– 'यदि आप दूसरों को समझते हैं तो आप होशियार हैं। यदि आप खुद को समझते हैं तो आप प्रबुद्ध हैं।' ऐसा ही कुछ लेखिका ने कसक कहानी में महसूस किया है– 'बचपन में मैं कहानी करती थी कि मैं दूसरों के मन के अंदर का खूब भाँप लेती हूँ, कब कोई डींग हाक रहा है कब कोई खास मतलब से बात बना रहा है, कौन निर्दोष है कौन कपटी, सब मुझसे पूछ लो।'

आगे चलकर वह मेरी इस प्रवृत्ति को मेरी 'पॉलीटिक्स' से जोड़ने लगी –तुम लोगों को अपना कपट, अपनी तानाशाही नहीं दिखती?..... वैसे हमारे साथ बिताए वक्त का लेखा–जोखा कहीं है तो जरूर तीन चौथाई भाग हमारी लड़ाइयों का ही हिसाब देगा। बात –बेबात जंग छिड़ जाती।

दोनों मित्रों की अपनी गति थी दोनों अपनी–अपनी दिशा में प्रयास कर रहे थे, दोनों की नोक–झोंक पूरी कहानी का परीक्षण है, दोनों की दिशा मायने रखती है। दोनों एक दूसरे के विरोधी नहीं थे बल्कि एक दूसरे का हर स्तर पर समझने का प्रयास करते थे उनकी मित्रता के रिश्ते खासे मजबूत थे, दोनों बेहतर कल की ओर समन्वय और सम्मान से बढ़ना चाहते थे। दोनों किसी भी निर्णय पर पहुँचने से पहले परिपक्व संवाद खुले मन से कर लेती है। एक दूसरे को नकारती भी, वह बहस के माध्यम से ही थी इसके पीछे कारण यही था कि कोई भी बात आदर्श स्थिति तक पहुँचे सके।

'कसक' कहानी के अंत में अच्छी खासी आत्मान्वेषी यात्रा हो गई। कहानी के जिस पात्र के बारे में बात हो रही है उसे कभी भी अकेलापन बोझ नहीं लगा। मानसिक संताप और संबंधों में सिलवटों की स्थिति कभी भी उत्पन्न नहीं हुई। फिर कब उसके मन में भय बैठ गया स्वयं को दूसरों से कब अलग समझने की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई ? क्यों वह अपनी किसी भी अवधारणा को किसी के समक्ष नहीं रख पाई ? स्वयं को उपेक्षित समझने लगी। क्यों चिंता के इतने भंवर में फंस गई कि अकेलेपन की घबराहट वाली स्थिति से भी पार पहुंच गई। उसका पति, उसके मित्र, उसके सहयोगी, उसके आसपास के लोग कोई उसकी मदद नहीं कर पाए। वह भी किसी से इतनी परिपक्व अवस्था में होने पर भी कुछ कह नहीं पाई। अत्मविश्वास की इतनी बलिष्ठ होने पर भी अत्मविश्वास कहां जाकर टूटा जहाँ सब खुद ने अपने हाथों से समाप्त कर लिया। कसक कहानी के एक–एक मोती एक–एक विचार है जो कहानी को विचारों से वैभवशाली और संपन्न बनाते हैं समाज के लिए उपयोगी विचारों की विकास यात्रा छोड़ते हैं– झूठी और कोरी कल्पनाशीलता से मुक्ति दिलाते हैं। समाज के सामने एक यह प्रश्न खड़ा करते हैं कि परिपक्वता के बाद भी ऐसी हृदय विदारक स्थिति समाज को कहाँ लेकर जाएगी 'फिर मन व्याकुल होने लगता है। नि: शब्द सवाल जी को घेरने लगते हैं। ऐसे में मेरे पास एक ममता भरी रूह बैठ जाती है। किसी के कोमल सान्निध्य का एहसास होता है।'

पूछना चाहती हूँ उससे क्या था तुम्हारे मन में जब तुम 'उड़ती' हुई नीचे चली आ रही थी उसे तेरहवीं मंजिल से ? क्या तब भी तुम जीव के भीतर थी ? प्रमाणिकता से बात कहना इस कहानी का विशेष गुण है समाज और दुनिया नित– नवीन संभावनाओं से भर रही है। बहुआयामी अवधारणाओं के कारण कभी–कभी व्यक्ति ऐसा रास्ता चुन लेता है जहाँ वह स्वयं के द्वारा उत्पन्न किये गए सवालों के घेरे में खुद को अकेला खड़ा पाता है। बचाव में वह यह नहीं सोच पाता की सबसे बड़ी बात जिंदगी के बचे रहने की है। बाकी सभी बातें तबाही से कम की नहीं है। जीवन को किसी भी स्थिति में सुरक्षित रखा जाए जीवन जीने की नई दिशा का रास्ता तलाशने की गुंजाइश हमेशा रहना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. समकालीन महिला लेखन – डॉ. ओम प्रकाश शर्मा
2. भारतीय नारी दशा और दिशा – आशारानी ब्होरा
3. हिन्दी के आधुनातन नारी उपन्यास – इन्दु प्रकाश पाण्डेय
4. हिन्दी उपन्यासों में स्त्री अस्मिता की अभिव्यक्ति – डॉ. वीनारानी यादव

****